पाठ – बिरजू महाराज से साक्षात्कार

शब्दार्थ-

- **संघर्षों** - कठिनाइयाँ, मुश्किलों से भरा समय
- **छोटे नवाब** - किसी समय धनवान और रौबदार घर के छोटे सदस्य
- **हवेली** - बहुत बड़ा और भव्य घर
- **पहरा** - सुरक्षा के लिए नियुक्त किए गए सिपाही, निगरानी
- **देहांत** - मृत्यु
- **ज़री** - सुनहरी या चाँदी की कढ़ाई वाले कपड़े की किनारी https://shorturl.at/pqwqx
- **गुजारा** - जीवन यापन, ज़रूरतों को पूरा करना
- **अभ्यास** - लगातार मेहनत या अभ्यास करना
- **कथक** - उत्तर भारत का एक शास्त्रीय नृत्य http://y2u.be/6Ap74ucreRA
- **गुरु** - शिक्षक, मार्गदर्शक
- **तालीम** - प्रशिक्षण, शिक्षा
- **औपचारिक प्रशिक्षण** - सही से सिखाया जाने वाला अभ्यास या शिक्षा
- **दरबार** - राजा या नवाब का दरबार, जहाँ दरबारी और कलाकार मौजूद रहते हैं
- **गंडा (ताबीज़)** - एक धार्मिक प्रतीक रूपी धागा या धातु, गुरु-शिष्य संबंध का प्रतीक
- **लगन** - निष्ठा
- **सामर्थ्य** - योग्यता, क्षमता
- **आई.ए.एस. अफसर** - भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी
- **नर्तकी** - महिला नृत्यांगना, जो नृत्य करती है
- **नाटिकाएँ** - लघु नाटक या छोटे मंचन
- **दृढ़ निश्चय** - पक्का संकल्प, पक्का इरादा
- **पनपना** - विकसित होना, पूरी तरह खिलना या उभरना
- **परंपरा** - पुरानी और चली आ रही रीति
- **आदिपर्व** - महाभारत का पहला भाग
- **अनौपचारिक** - बिना किसी नियम या औपचारिकता के, सहज
- **ढंग** - कहानी सुनाने की शैली
- **कथिक** - कथक नृत्य करने वाले व्यक्ति
- **प्रचलित** - जो आम लोगों में प्रसिद्ध हो गया हो
- **मग्न** - पूरी तरह डूब जाना, ध्यान केंद्रित कर लेना
- **घराना** - शास्त्रीय संगीत या नृत्य की विशिष्ट शैली या परंपरा, जिसे एक खास क्षेत्र या परिवार अपनाता है
- **शैली** - ढंग या विशेष तरीका
- **लय** - गति और ताल का क्रम
- **अदृश्य** - जो दिखाई न दे

- **निमंत्रण** - बुलावा
- **तपस्या** - कठिन अभ्यास और एकाग्र साधना
- **घसियारा** - घास काटने वाला व्यक्ति
- **हँसिया** - घास काटने का चंद्राकार औजार
- **संतुलन** - बराबरी या तालमेल
- **आवरण** - ढकने वाली परत या सजावट की परत
- **परंपरा** - किसी कार्य या विचार को लंबे समय तक अपनाए रखना, रिवाज़
- **प्रस्तुतीकरण** - किसी चीज़ को प्रस्तुत करने का तरीका या शैली
- **भाव-भंगिमा** - शरीर और चेहरे के हाव-भाव से भावों की अभिव्यक्ति
- **निराला** - अनोखा, अलग तरह का
- **ब्रह्मा, विष्णु, महेश** - हिंदू धर्म के प्रमुख देवता, यहाँ आदर्श गुरु या मार्गदर्शक के रूप में संकेत
- **रचना** - कुछ नया बनाना या सृजन करना
- **कायम रखना** - बनाए रखना, जारी रखना
- **आधुनिक कवि** - नए समय के कवि, जो वर्तमान युग में लिखते हैं
- **दर्शक** - देखने वाला व्यक्ति
- **संस्कार** - परंपरा और व्यवहार की सीख जो परिवार और समाज से मिलती है
- **तौर-तरीके** - व्यवहार या काम करने का तरीका
- **आश्रय** - शरण, सहारा या सुरक्षा देने की जगह
- **स्वभाव** - किसी व्यक्ति का स्वाभाविक व्यवहार या चरित्र
- **निर्भर** - आश्रित
- **मंच** - वह ऊँचा स्थान या प्लेटफ़ॉर्म जहाँ कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं
- **चाँदनी** - बिछाने की सफेद चादर, विशेष रूप से कार्यक्रमों के लिए प्रयोग में लाई जाती है
- **शृंगार** - सजने-संवरने की प्रक्रिया
- **चंदनलेप** - चंदन का लेप या पेस्ट, जिसे त्वचा पर सजावटी या ठंडक के लिए लगाया जाता है
- **पनघट** - वह स्थान जहाँ से औरतें पानी भरने जाती हैं
- **विस्तृत वर्णन** - किसी चीज़ का विस्तार से बताया जाना
- **कल्पना** - मन में किसी दृश्य या बात की तस्वीर बनाना
- **छुटपन** - बचपन, जब बच्चा बहुत छोटा होता है
- **तबला पीटना** - तबले (वाद्य यंत्र) को बजाना
- **लय** - ताल या संगीत की गति, सुर और ताल का संतुलन
- **लहरा** - कोई खास धुन या सुर
- **फरमाइश** - किसी चीज़ को करने या सुनने का अनुरोध या इच्छा
- **शास्त्रीय नृत्य** - नियमों और परंपराओं पर आधारित नृत्य, जिसे गुरु से विधिवत सीखा जाता है
- **लोक नृत्य** - किसी क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक नृत्य शैली, जो आम लोग सामूहिक रूप से करते हैं
- **सामूहिक** - समूह में किया जाने वाला, एक साथ मिलकर किया गया

- **मनोरंजन** - खुशी और आनंद के लिए किया गया कार्य
- **मन बहलाव** - दिल लगाने या खुद को व्यस्त रखने का तरीका
- **संतुष्टि** - संतोष या तृप्ति का अनुभव
- **दर्शक** - देखने वाले लोग
- **कथावाचक** - कहानी सुनाने वाला व्यक्ति
- **दयनीय** - दुखद या खराब स्थिति
- **लोकप्रियता** - पसंद किए जाने की स्थिति, लोगों में प्रसिद्धि
- **शोर वाला संगीत** - तेज़ और ऊँचे स्वर वाला आधुनिक संगीत
- **प्रचलन** - चलन में होना
- **दैनिक जीवन** - रोजमर्रा की ज़िंदगी
- **मूर्तिकला** - मूर्तियाँ बनाने की कला, जिसमें शरीर की मुद्राओं की सुंदरता होती है
- **कोमलता** - नरमी, सौम्यता
- **ओज** - शक्ति और तेज
- **चिराग की लौ** - दीपक की नर्म, हिलती हुई लौ
- **घूँघट** - सिर या चेहरे को ढकने वाला कपड़ा
- **तंबू** - बड़ा कपड़ा या छावनी जो टेढ़ा-मेढ़ा और फैला हुआ होता है (यहाँ अतिशयोक्ति में प्रयोग)
- **खाली समय** - फुर्सत का समय, जब कोई ज़रूरी काम न हो
- **जिज्ञासा** - जानने की इच्छा
- **कल-पुर्जे** - मशीन के छोटे-छोटे भाग
- **औजार** - उपकरण, यंत्र
- **चित्रकार** - पेंटिंग बनाने वाला व्यक्ति
- **प्रायः** - अधिकतर, आमतौर पर
- **रुचि** - दिलचस्पी, लगाव
- **सदुपयोग** - अच्छे तरीके से इस्तेमाल करना
- **बौद्धिक विकास** - सोचने-समझने की शक्ति का बढ़ना, मानसिक प्रगति
- **हुनर** - कौशल, विशेष कला या क्षमता
- **आत्मनिर्भर** - जो अपने पैरों पर खड़ा हो सके, स्वावलंबी
- **मन की शांति** - मानसिक संतुलन और सुख
- **अनुशासन** - नियमों के अनुसार रहना, व्यवस्थित जीवनशैली
- **संतुलन** - तालमेल या बराबरी की स्थिति
- **तालमेल** - एकसाथ सही तरह से काम करना
- **लक्ष्य** - उद्देश्य
- **प्रेरणा** - आगे बढ़ने की ऊर्जा या उत्साह

eGyanarchive

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे सही उत्तर कौन-सा है? उनके सामने तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

प्रश्न 1. बिरजू महाराज ने गंडा बाँधने की परंपरा में परिवर्तन क्यों किया होगा?

- वे गुरु के प्रति शिष्य के निष्ठा भाव को परखना चाहते थे।
- वे नृत्य शिक्षण के लिए परंपरा को महत्वपूर्ण नहीं मानते थे।
- वे नृत्य के प्रति शिष्य के लगन व समर्पण भाव को जाँचना चाहते थे।
- वे शिष्य की भेंट देने की सामर्थ्य को परखना चाहते थे।

उत्तर:

- वे नृत्य के प्रति शिष्य के लगन व समर्पण भाव को जाँचना चाहते थे। (★)

प्रश्न 2. "जीवन में उतार चढ़ाव तो होता ही है।" बिरजू महाराज के जीवन में किस तरह के उतार-चढ़ाव आए?

- पिता के देहांत के बाद आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ा।
- कोई भी संस्था नृत्य प्रस्तुतियों के लिए आमंत्रित नहीं करती थी।
- किसी समय विशेष में घर में सुख- समद्धि थी।
- नृत्य के औपचारिक प्रशिक्षण के अवसर बहुत ही सीमित हो गए थे।

उत्तर:

- पिता के देहांत के बाद आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ा। (★)

प्रश्न 3. बिरजू महाराज के अनुसार बच्चों को लय के साथ खेलने की अनुशंसा क्यों की जानी चाहिए?

- संगीत, नृत्य, नाटक और सभी कलाएँ बच्चों में मानवीय मूल्यों का विकास नहीं करती हैं।
- कला संबंधी विषयों से जुड़ाव बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
- कला भी एक खेल है, जिसमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।
- वर्तमान समय में कला भी एक सफल माध्यम नहीं है।

उत्तर:

- कला संबंधी विषयों से जुड़ाव बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। (★)

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि अपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

उत्तर:

(विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ चर्चा करके बताएँगे कि उनके द्वारा विकल्प चुनने के क्या कारण हैं।)

1. मैंने यह विकल्प इसलिए चुना क्योंकि बिरजू महाराज गंडा बाँधने को केवल एक परंपरा नहीं बनाना चाहते थे। वे शिष्य के नृत्य के प्रति लगन और मेहनत को देखकर ही यह कार्य करते थे। उनके लिए गंडा बाँधना एक पवित्र परंपरा थी।

2. मैंने यह विकल्प इसलिए चुना क्योंकि बिरजू महाराज ने अपने जीवन में बचपन से लेकर बड़े होने तक कई कठिनाइयाँ देखीं। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति पिता के मरने के बाद ठीक नहीं रही। इसके बावजूद उन्होंने अपने नृत्य और कला में मेहनत और समर्पण बनाए रखा।
3. मैंने यह विकल्प इसलिए चुना क्योंकि नृत्य और संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि बच्चों के दिमाग और सोच के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। बिरजू महाराज इसे समझते थे और सभी को प्रेरित करते थे।

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द एवं शब्द समूह नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही संदर्भों या अवधारणाओं से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	संदर्भ या अवधारणा
1. कर्नाटक संगीत शैली	1. भारत की प्राचीन गायन-वादन गीत-नृत्य अभिनय परंपरा का अभिन्न अंग है। इसमें शब्दों की अपेक्षा सुरों का महत्व होता है। इसमें नियमों की प्रधानता होती है।
2. घराना	2. भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैली, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत के राज्यों में प्रचलित है। इसमें स्वर शैली की प्रधानता होती है। जल तरंगम, वीणा, मृदंग, मंडोलिन वाद्ययंत्रों से संगत दी जाती है।
3. शास्त्रीय संगीत	3. हिंदू धर्म के 16 संस्कारों में एक है, यह कान में सोने या चाँदी का तार पहनाने से संबंधित है।
4. हिंदुस्तानी संगीत शैली	4. हिंदुस्तानी संगीत में कलाकारों का एक समुदाय या कुटुंब, जो संगीत नृत्य की विशिष्ट शैली साझा करते हैं। संगीत या नृत्य की परंपरा, जिसमें सिद्धांत और शैली पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रशिक्षण के द्वारा आगे बढ़ती है।
5. कनछेदन	5. किसी क्षेत्र विशेष में लोक द्वारा किए जाने वाले पारंपरिक नृत्य। लोक नृत्य, क्षेत्र विशेष की संस्कृति एवं रीति-रिवाजों को दर्शाते हैं। ये विशेष रूप से फसल कटाई, उत्सवों आदि के अवसर पर किए जाते हैं।
6. लोक नृत्य	6. भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैली, जो मुख्य रूप से उत्तर भारत के राज्यों में प्रचलित है। तबला, सारंगी, सितार, संतूर वाद्ययंत्रों से संगत दी जाती है। इसके प्रमुख रागों की संख्या छह है।

उत्तर:

1. – 2
2. – 6
3. – 1
4. – 4
5. – 3
6. – 5

शीर्षक

• इस पाठ का शीर्षक 'बिरजू महाराज से साक्षात्कार' है। यदि आप इस साक्षात्कार को कोई अन्य नाम देना चाहते हैं तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? लिखिए।

उत्तर:

यदि मुझे इस साक्षात्कार का कोई दूसरा नाम देना होता, तो मैं इसे **'पद्मविभूषण बिरजू महाराज'** रखता। पद्मविभूषण भारत का बहुत बड़ा सम्मान है, जो किसी भी क्षेत्र में असाधारण योगदान देने वाले व्यक्ति को दिया जाता है। बिरजू महाराज ने कथक नृत्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है, इसलिए यह शीर्षक पूरी तरह उपयुक्त और सही लगता है।

पंक्तियों पर चर्चा

साक्षात्कार में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए।

- "तुम नौकरी में बँट जाओगे। तुम्हारे अंदर का नर्तक पूरी तरह पनप नहीं पाएगा।"
- "लय हम नर्तकों के लिए देवता है।"
- "नृत्य में शरीर, ध्यान और तपस्या का साधन होता है।"
- "कथक में गर्दन को हल्के से हिलाया जाता है, चिराग की लौ के समान।"

उत्तर:

- नृत्य में पूरी मेहनत, ध्यान और लगन बहुत जरूरी होती है। यह इतना समय माँगता है कि अगर कोई पूरी नौकरी करता है, तो नृत्य के प्रति पूरी मेहनत और ध्यान नहीं दे पाएगा।
- जैसे हम भगवान की पूजा ध्यान और समर्पण से करते हैं, वैसे ही नृत्य में लय का पालन बहुत महत्वपूर्ण है। नर्तक लय को भगवान की तरह मानकर अभ्यास करते हैं।
- नृत्य शरीर के माध्यम से किया जाता है। इसमें ध्यान और तपस्या बहुत जरूरी होती है। इसलिए शरीर को साधना का जरिया कहा गया है।
- जैसे चिराग धीरे-धीरे और सुंदर तरीके से जलता है, वैसे ही कथक नृत्य में नर्तक अपनी गर्दन को धीरे और नजाकत के साथ हिलाता है।

सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1. साक्षात्कार को एक बार पुनः पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) बिरजू महाराज नृत्य का औपचारिक प्रशिक्षण आरंभ होने से पहले ही कथक कैसे सीख गए थे?

उत्तर:

बिरजू महाराज के घर में कथक का माहौल था। उनके पिता व दोनों चाचा कथक नर्तक थे, अतः औपचारिक प्रशिक्षण शुरू होने से पहले ही बिरजू महाराज उन्हें देख-देखकर कथक करना सीख गए थे।

(ख) नृत्य सीखने के लिए संगीत की समझ होना क्यों अनिवार्य है?

उत्तर:

नृत्य सीखने के लिए संगीत की समझ होना इसलिए आवश्यक है क्योंकि संगीत में लय होती है अतः उसका ज्ञान

आवश्यक है। लय एक तरह का आवरण है जो नृत्य को सुंदरता प्रदान करता है। अगर नर्तक को सुर-ताल की समझ है, तो वह जान पाएगा कि नृत्य की लय ठीक है या नहीं।

(ग) नृत्य के अतिरिक्त बिरजू महाराज को और किन-किन कार्यों में रुचि थी?

उत्तर:

नृत्य के अतिरिक्त बिरजू महाराज का मशीनों में खूब मन लगता था। कोई भी मशीन या यंत्र खोलकर उसके कल-पुर्जे देखने में उनकी रुचि थी। उनके ब्रीफकेस में हरदम पंखा, फ्रिज ठीक करने वाले औज़ार रहते थे। इसके अलावा, उन्हें पेंटिंग बनाने में भी रुचि थी।

(घ) बिरजू महाराज ने बच्चों की शिक्षा और रुचियों के बारे में अभिभावकों से क्या कहा है?

उत्तर:

बिरजू महाराज ने अभिभावकों से कहा है कि यदि बच्चे की रुचि है, तो उसे लय के साथ खेलने दें। इस खेल की दुनिया में संतुलन और समय का सदुपयोग बच्चे के बौद्धिक विकास के लिए बहुत ज़रूरी है। बच्चों के पास शिक्षा या कोई न कोई हुनर ज़रूर होना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें। हुनर ऐसा खज़ाना है, जिसे कोई छीन नहीं सकता, वक्त पड़ने पर हमेशा काम आता है।

प्रश्न 2. पाठ में से उन प्रसंगों की पहचानकर उन पर चर्चा कीजिए, जिनसे पता चलता है कि-

(क) बिरजू महाराज बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

उत्तर:

घर में कथक का माहौल था। उनके पिता, चाचा आदि कथक नर्तक थे, अत: बिरजू महाराज ने औपचारिक प्रशिक्षण से पूर्व ही कथक सीख लिया था और नवाब के दरबार में नृत्य प्रस्तुतियाँ भी देने लगे थे।

- वे नृत्य के साथ-साथ गाते और बजाते भी थे। नाटिकाएँ तैयार करना और उनके लिए संगीत बनाना भी उनका काम था।
- उन्होंने कथक की पुरानी परंपरा को बनाए रखते हुए नए अंदाज़ में प्रस्तुतीकरण किया। टैगोर और त्यागराज जैसे आधुनिक कवियों की रचनाओं पर भी कथक रचनाएँ बनाई।
- बहुत छोटे ही उम्र में उन्होंने तबला बजाना शुरू कर दिया। उनके चाचा ने उनकी कला और लय को देखकर उन्हें तबला बजाने के लिए प्रोत्साहित किया। पाँच साल की उम्र तक वे हारमोनियम बजाने लगे और फ़िल्मी गीतों पर भी नाचते और गाते।
- उन्हें मशीनें ठीक करने का शौक भी था। पंखा, फ्रिज़ आदि वे स्वयं ठीक कर लेते थे। उनका कहना था, "अगर मैं नर्तक न होता तो शायद इंजीनियर होता।"
- अपनी बेटी और दामाद को देखकर उन्हें पेंटिंग का शौक भी हो गया। मन होने पर वे पेंटिंग भी बनाते थे।

(ख) बिरजू महाराज को नृत्य की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में उनकी माँ का बहुत योगदान रहा।

उत्तर:

संघर्ष के समय बिरजू महाराज की माँ हमेशा उनका साथ देती रहीं। पिता के निधन के बाद घर में आर्थिक तंगी आ

गई। उस समय माँ और बेटे ने बहुत मुश्किलों का सामना किया। वे पुरानी ज़री की साड़ियों को जलाकर उनके सोने-चाँदी के तार निकालकर बेचते और अपने खर्चे निकालते थे। कभी-कभी नृत्य के कार्यक्रम से कुछ पैसे मिल जाते थे, लेकिन कई बार इतनी मुश्किल होती कि दिन में एक ही बार खाना मिलता। फिर भी उनकी माँ उन्हें प्रोत्साहित करतीं और कहतीं, "खाने में भले ही बस चना ही मिले, पर अभ्यास कभी मत छोड़ो।"

(ग) बिरजू महाराज महिलाओं के लिए समानता के पक्षधर थे।

उत्तर:

बिरजू महाराज की बहनों को कथक नहीं सिखाया गया, किंतु उन्होंने अपनी बेटियों को खूब कथक सिखाया। उनका कहना था कि लड़कियों के पास शिक्षा या कोई-न-कोई अन्य हुनर अवश्य होना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें। वे लड़कों के समान लड़कियों को भी शिक्षा का समान अवसर देने के पक्ष में थे।

शब्दों की बात

(क) पाठ में आए हुए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं, इन्हें ध्यान से पढ़िए-

आजीविका, सीमित, प्रशिक्षण, सुंदरता, आधुनिक, पारंपरिक, भारतीय, सामूहिक, शास्त्रीय

आपने इन शब्दों पर ध्यान दिया होगा कि मूल शब्द के आगे या पीछे कोई शब्दांश जोड़कर नया शब्द बना है। इससे शब्द के अर्थ में परिवर्तन आ गया है। शब्द के आगे जुड़ने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे कि—

अदृश्य – अ + दृश्य
आवरण- आ + वरण
प्रशिक्षण – प्र + शिक्षण

यहाँ पर 'अ', 'आ', 'प्र' उपसर्ग हैं।

शब्द के पीछे जुड़ने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं और मूल शब्द के अर्थ में नवीनता, परिवर्तन या विशेष प्रभाव उत्पन्न करते हैं, जैसे कि—

सीमित – सीमा + इत
सुंदरता – सुंदर + ता
भारतीय भारत + इय
सामूहिक – समूह + इक

यहाँ पर 'इत', 'ता', 'ईय', और 'इक' प्रत्यय हैं।

उत्तर:

(विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या – 106-107 को पढ़कर उपसर्ग और प्रत्यय के विषय में समझें।)

(ख) नीचे दो तबले हैं एक में कुछ शब्दांश (उपसर्ग व प्रत्यय) हैं, दूसरे तबले में मूल शब्द हैं। इनकी सहायता से नए शब्द बनाइए-

उत्तर:

मार्मिक, आगमन, राष्ट्रीय, खंडित, श्रमिक, सांस्कृतिक, अकर्म, सुकर्म, अनाम, असाधरण।

(ग) इस पाठ में से उपसर्ग व प्रत्यय की सहायता से बने कुछ और शब्द छाँटकर उनसे वाक्य बनाइए।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

इन शब्दों से वाक्य नीचे दिए गए हैं:

1. **मार्मिक** - स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियाँ बहुत **मार्मिक** होती हैं।
2. **आगमन** - मानसून के **आगमन** से किसानों के चेहरे खिल उठे।
3. **राष्ट्रीय** - जन-गण-मन हमारा **राष्ट्रीय** गान है।
4. **खंडित** - पुरातत्व विभाग को खुदाई में एक **खंडित** मूर्ति मिली।
5. **श्रमिक** - हर **श्रमिक** को उसकी मेहनत का उचित फल मिलना चाहिए।
6. **सांस्कृतिक** - हमारे विद्यालय में एक भव्य **सांस्कृतिक** कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
7. **अकर्म** - गीता के अनुसार **अकर्म** में लिप्त रहना भी एक प्रकार का पाप है।
8. **सुकर्म** - हमें हमेशा **सुकर्म** करने चाहिए क्योंकि अच्छे कर्मों का फल हमेशा अच्छा होता है।
9. **अनाम** - इस देश की रक्षा में कई **अनाम** शहीदों ने अपना बलिदान दिया है।
10. **असाधारण** - कठिन परिस्थितियों में भी शांत रहना एक **असाधारण** गुण है।

शब्दों का प्रभाव

• पाठ में आए नीचे दिए गए वाक्य पढ़िए-

प्रश्न 1. "कुछ कथिक डर गए किंतु उन कथिकों की कला में इतना दम था कि डाकू सब कुछ भूलकर उन कथिकों के कथक में मग्न हो गए।" इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'इतना' हटाकर वाक्य पढ़िए और पहचानिए कि क्या परिवर्तन आया है?

पाठ में आए हुए वाक्यों में से ऐसे ही कुछ और शब्द ढूँढ़कर उन्हें रेखांकित कीजिए जिनके प्रयोग से वाक्य में विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है?

उत्तर:

इस वाक्य में 'इतना' शब्द के प्रयोग से वाक्य में विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है।

अन्य उदाहरण

- जिन डिब्बों में कभी तीन चार लाख की कीमत के हार हुआ करते थे वे अब खाली पड़े थे।
- भेंट मिलने पर ही गंडा बाँधूगा।
- कई वर्षों तक नृत्य सिखाने के बाद जब देखता हूँ कि शिष्य में सच्ची लगन है तभी गंडा बाँधता हूँ।
- तुम नौकरी में बँट जाओगे। तुम्हारे अंदर का नर्तक पूरी तरह पनप नहीं पाएगा।
- हुनर ऐसा खज़ाना है जिसे कोई नहीं छीन सकता और वक्त पड़ने पर काम आता है।

पाठ से आगे

कला का संसार

(क) बिरजू महाराज – " कथक की पुरानी परंपरा को तो कायम रखा है। हाँ, उसके प्रस्तुतीकरण में बदलाव किए हैं। " इस कथन को ध्यान में रखते हुए लिखिए कि कथक की प्रस्तुतियों में किस प्रकार के परिवर्तन आए हैं?

उत्तर:

बिरजू महाराज ने कथक नृत्य की पुरानी परंपराओं को बनाए रखा और अपने परिवार के नर्तकों की भाव-भंगिमाओं को भी अपनी प्रस्तुतियों में शामिल किया। इसके अलावा, उन्होंने आधुनिक कवियों की रचनाओं (चाहे किसी भी भाषा की हों) को लेकर कथक नृत्य की प्रस्तुतियाँ तैयार कीं। इस तरह, उन्होंने पारंपरिक शैली को बनाए रखते हुए नई प्रयोगधर्मी प्रस्तुतियों के माध्यम से नृत्य में परिवर्तन और नवीनता लाई।

(ख) लोकनृत्य और शास्त्रीय नृत्य में क्या अंतर है? लिखिए।

(इस प्रश्न के उत्तर के लिए आप अपने सहपाठियों, अभिभावकों, शिक्षकों, पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।)

उत्तर:

लोकनृत्य

1. लोकनृत्य किसी क्षेत्र या संस्कृति से जुड़े होते हैं।
2. ये सरल और अनौपचारिक होते हैं, आम लोग इन्हें करते हैं।
3. ये मनोरंजन और उत्सवों के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं।

   उदाहरण: भांगड़ा (पंजाब), गरबा (गुजरात), लावणी (महाराष्ट्र)

शास्त्रीय नृत्य

1. शास्त्रीय नृत्य नियमों और परंपराओं के अनुसार किए जाते हैं।
2. ये कठिन होते हैं और इन्हें सीखने के लिए प्रशिक्षण और अभ्यास की जरूरत होती है।
3. ये भावनात्मक और आध्यात्मिक होते हैं, विशेष राग और ताल के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं।

   उदाहरण: भरतनाट्यम (तमिलनाडु), ओडिसी (ओडिशा), कथक (उत्तर भारत)

निष्कर्ष: लोकनृत्य और शास्त्रीय नृत्य दोनों ही भारतीय संस्कृति की समृद्धि और विविधता को दर्शाते हैं।

(ग) "बैरगिया नाला जुलुम जोर,
नौ कथिक नचावें तीन चोर।
जब तबला बोले धीन – धीन,
तब एक-एक पर तीन-तीन।"
इस पाठ में हरिया गाँव में गाए जाने वाले उपर्युक्त पद का उल्लेख है। आप अपने क्षेत्र में गाए जाने वाले किसी लोकगीत को कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

यह अवध क्षेत्र में गाया जाने वाला पारंपरिक टोली गीत है।

- होली खेलें रघुबीरा
- अवध में होली खेलें रघुबीरा
- सिया के हाथ कनक पिचकारी
- लक्ष्मण हाथ अबीरा अवध में होली खेलें रघुबीरा।

साक्षात्कार की रचना

प्रस्तुत 'साक्षात्कार' के आधार पर बताइए –
(क) साक्षात्कार से पहले क्या – क्या तैयारियाँ की गई होंगी?

उत्तर:

साक्षात्कार की तैयारी के चरण:

1. **जानकारी एकत्र करना:** सबसे पहले बिरजू महाराज के जीवन, कार्य और उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी इकट्ठा की गई।
2. **समय और स्थान तय करना:** यह पता किया गया कि वे कहाँ रहते हैं, कब उपलब्ध होंगे और साक्षात्कार के लिए कितना समय दे सकते हैं। विश्वसनीय स्रोतों से संपर्क कर साक्षात्कार निश्चित किया गया।
3. **प्रश्नों की सूची तैयार करना:** संभावित प्रश्नों की लंबी सूची बनाई गई।
4. **प्रश्नों का चयन:** विचार-विमर्श के बाद उन प्रश्नों का चुनाव किया गया जो साक्षात्कार के उद्देश्य को पूरा करते हों।

(ख) आप इस साक्षात्कार में और क्या – क्या प्रश्न जोड़ना चाहेंगे?

उत्तर:

1. व्यक्तिगत जीवन और अनुभव

1. आपका बचपन और प्रारंभिक शिक्षा कैसी रही?
2. आपके मित्र और परिवारीजन आपके नृत्य में कैसे प्रेरणा देते थे?
3. आपके खान-पान और दिनचर्या में क्या विशेषताएँ थीं, जो नृत्य में आपकी ऊर्जा बनाए रखती थीं?
4. आपने बचपन में कौन-कौन से खेल या रुचियाँ अपनाई थीं, और उनका नृत्य पर क्या प्रभाव पड़ा?
5. आपकी युवावस्था में नृत्य सीखने और प्रस्तुतियाँ देने के अनुभव कैसे रहे?
6. नृत्य और संगीत के प्रति आपकी लगन का मूल स्रोत क्या रहा?

2. सामाजिक–वैश्विक दृष्टिकोण

1. वर्तमान में भारत और विश्व में कला और संस्कृति की स्थिति के बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है?
2. ग्लोबल वार्मिंग, क्लाइमेट चेंज या पर्यावरणीय संकटों पर आपकी क्या राय है?
3. युवा पीढ़ी को नृत्य, संगीत या कला की ओर कैसे प्रेरित किया जा सकता है?
4. आधुनिक तकनीक और मीडिया के इस युग में पारंपरिक कलाओं के महत्व पर आपका क्या विचार है?
5. जीवन में अनुशासन, समर्पण और मेहनत के महत्व पर आपकी व्यक्तिगत सीख क्या रही?

(ग) यह साक्षात्कार एक सुप्रसिद्ध कलाकार का है। यदि आपको किसी सब्जी विक्रेता, रिक्शा चालक, घरेलू सहायक या सहायिका का साक्षात्कार लेना हो तो आपके प्रश्न किस प्रकार के होंगे?

उत्तर:

यदि मैं किसी सब्जी विक्रेता का साक्षात्कार लूँगा, तो मैं इन बिन्दुओं पर प्रश्न पूछूँगा

1. दिनचर्या और कार्यशैली

- आपका दिन सुबह किस समय शुरू होता है?
- सब्ज़ियों का चुनाव आप कैसे करते हैं?
- खड़े होकर बेचने और घूम-घूमकर बेचने में क्या अंतर अनुभव करते हैं?

2. पेशेगत चुनौतियाँ और अनुभव

- इस काम में सबसे बड़ी कठिनाइयाँ कौन-सी हैं?
- मौसम या अन्य परिस्थितियों का आपके काम पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- क्या कभी ऐसा होता है कि आप यह काम छोड़ देना चाहें?

3. आर्थिक पहलू और संतोष

- आपकी रोज़ाना/साप्ताहिक कमाई लगभग कितनी होती है?
- क्या आप अपनी आजीविका से संतुष्ट हैं?

4. व्यक्तिगत जीवन

- कितने बजे तक घर पहुँच जाते हैं?
- काम के अतिरिक्त आपके पास अपने लिए समय कैसे होता है?

सृजन

आपके विद्यालय में कथक नृत्य का आयोजन होने जा रहा है।

(क) आप दर्शकों को कथक नृत्यकला के बारे में क्या-क्या बताएँगे? लिखिए।

उत्तर:

1. किस प्रकार की कथक नृत्य कला की प्रस्तुति होने जा रही है, उसके विषय में बताएँगे।
2. नृत्य के माध्यम से कौन – सी कहानी प्रस्तुत की जाएगी, उसकी थीम के विषय में बताएँगे।
3. नृत्य को प्रस्तुत करने वाले कलाकार और उसका सहयोग करने वाले सहयोगियों की जानकारी देंगे।

egyanarchive

4. इसके अतिरिक्त यदि किसी विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता हुई, तो उससे संबंधित जानकारी देंगे।

(ख) इस कार्यक्रम की सूचना देने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर:

सम्मानित अतिथियों, अभिभावकों, शिक्षकों और प्रिय विद्यार्थियों को सूचित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रहे है कि दिनांक 12.4.2025 को दोपहर 2:30 पर संत कबीर विद्यालय के वाटिका सभागार में कक्षा 10 की प्रतिभाशाली छात्रा कुमारी हार्दिका बंसल द्वारा कथक नृत्य की विविध शैलियों में मोहक नृत्य प्रस्तुत किया जाएगा। आप सभी से अनुरोध है कि कृपया समय पर पधार कर कार्यक्रम का आनंद ले और बच्चों का उत्साहवर्धन करें।
संपर्क करें-संत कबीर विद्यालय प्रशासन, नई दिल्ली, फोन-989744600

(ग) यदि इस नृत्य कार्यक्रम में कोई दृष्टिबाधित (दो देख नहीं सकते) दर्शक है और वह नृत्य का आनंद लेना चाहे तो इसके लिए विद्यालय की ओर से क्या व्यवस्था की जानी चाहिए?

उत्तर:

1. दृष्टिबाधित दर्शक के लिए विद्यालय द्वारा ऑडियो विवरण प्रदान किया जा सकता है, जिसमें नृत्य की गतिविधियों, केंद्रीय भाव और संगीत का वर्णन किया जाता है।
2. नृत्य कार्यक्रम से पहले या बाद में दृष्टिबाधित दर्शकों को ब्रेल लिपि द्वारा तैयार नृत्य की मुद्राओं और गतिविधियों को व्यक्त करने वाले कागज़ को स्पर्श करके अनुभव करने का अवसर प्रदान किया जा सकता है।
3. दृष्टिबाधित दर्शकों के लिए विशेष सिटिंग व्यवस्था की जा सकती है; जैसे कि ध्वनि प्रणाली के साथ विशेष सीटें |

आज की पहेली

एक विद्यार्थी ने अपनी डायरी में अपने विद्यालय के किसी एक दिन का उल्लेख किया है। उस उल्लेख में संगीत की कुछ तालों के नाम आए हैं। आप उन तालों के नाम ढूँढ़िए-

कल हमारे विद्यालय में संगीत और नृत्य सभा का आयोजन हुआ था। उसमें एक-दो नहीं बल्कि चार कलाकार आए थे। उन कलाकारों में एक का नाम रूपक और दूसरे का नाम लक्ष्मी था। शेष दो कलाकारों के नाम पता नहीं चल पाए। वे दोनों जब अपनी प्रस्तुति के लिए मंच पर आए तो दर्शकों से पूछने लगे— "तिलवाड़ा, दादरा या झूमरा?" दर्शक बोले— "तीनों में से कोई नहीं। हमें दीपचंदी और कहरवा पसंद है।" दर्शकों की यह बात सुनते ही कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति प्रारंभ कर दी।

उत्तर:

• डायरी के इस उल्लेख में संगीत की इन तालों के नाम आए हैं:

1. **तिलवाड़ा** - http://y2u.be/qDgHnbX0OFo
2. **दादरा** - http://y2u.be/4V9XUMFznMs
3. **धमार** - http://y2u.be/tIGnTPr03bg
4. **दीपचंदी** - http://y2u.be/_S5xDDDqkB8
5. **कहरवा** - http://y2u.be/vEdsO1MqaYc

• कल हमारे विद्यालय में संगीत और नृत्य सभा का आयोजन हुआ था। उसमें एक – दो नहीं बल्कि चार कलाकार आए थे। उन कलाकारों में एक का नाम रूपक और दूसरे का नाम लक्ष्मी था। शेष दो कलाकारों के नाम पता नहीं चल पाए। वे दोनों जब अपनी प्रस्तुति के लिए मंच पर आए तो दर्शकों से पूछने लगे–" तिलवाड़ा, दादरा या झूमरा?" दर्शक बोले–"तीनों में से कोई नहीं। हमें दीपचंदी और कहरवा पसंद है।" दर्शकों की यह बात सुनते ही कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति प्रारंभ कर दी।

अब नीचे दी गई शब्द पहेली में से संगीत की उन तालों के नाम ढूँढ़कर लिखिए-

उत्तर:

ती	झ	रू	ल	भ	ति
न	च	प	क्ष्मी	क	ल
म	ल	क	ह	र	वा
ल	इ	झू	म	रा	ड़ा
दी	प	चं	दी	दा	त
ड़	च	क	र	द	ढ़
ए	म	ल	घ	रा	क

1. रूपक
2. लक्ष्मी
3. दादरा
4. झूमरा
5. तिलवाड़ा
6. दीपचंदी
7. कहरवा

झरोखे से

बिरजू महाराज ने भारत के विभिन्न राज्यों के शास्त्रीय नृत्यों का उल्लेख किया है। आइए, इनके बारे में अपनी समझ बढ़ाते हैं—

भरतनाट्यम्— यह नृत्य विधा का सर्वाधिक प्राचीन रूप है। इसका नाम 'भरतमुनि' तथा 'नाट्यम' शब्द से मिलकर बना है। कुछ विद्वान 'भरत' शब्द को राग ताल, भाव से भी जोड़ते हैं। इस नृत्य विद्या की उत्पत्ति का संबंध तमिलनाडु में मंदिर नर्तकों की एकल नृत्य प्रस्तुति 'सादिर' से है।

egyanarchive

https://youtu.be/JWhA3ldZcyY?si=Ii2QC9kMDP_schOh

कथकली— दक्षिण भारत के एक राज्य के मंदिरों में रामायण तथा महाभारत की कहानियाँ प्रस्तुत करने वाली दो लोक नाट्य परंपराएँ, रामानाट्टम तथा कृष्णानाट्टम कथकली के उद्भव का स्रोत हैं। यह संगीत, नृत्य और नाटक का अद्भुत संयोजन है। सुप्रसिद्ध मलयाली कवि वी. एन. मेनन के द्वारा राजा मुकुंद के संरक्षण में इसका प्रचार-प्रसार हुआ। यह नृत्य पुरूष मंडली द्वारा किया जाता है। इसकी विषयवस्तु महाकाव्यों और पुराणों में वर्णित कहानियाँ होती हैं। पूरे नृत्य नाटक का अनमोल आभूषण हैं भाव-भंगिमाएँ। आँखों और भौहों का लय संचालन बहुत महत्वपूर्ण है।
https://youtu.be/GBbcYtkqVKQ?si=ahYI1bB2dGO2d_rJ

कथक— ब्रजभूमि की रासलीला से उत्पन्न, कथक एक परंपरागत नृत्य विद्या है। कथक का नाम 'कथिक' से लिया गया है, जिसे कथावाचक भी कहते हैं।
ये कथिक महाकाव्यों के पदों व छंदों को संगीत तथा भाव-भंगिमाओं के साथ प्रस्तुत करते थे। कथक की महत्वपूर्ण विशेषता विभिन्न घरानों का विकास है। जुगलबंदी कथक प्रस्तुति का मुख्य आकर्षण है, जिसमें तबलावादक तथा नर्तक के बीच प्रतिस्पर्धात्मक खेल होता है।
https://youtu.be/IDbRj-dw__s?si=qCs5j2xVcl9kXYYD&t=13

कुचिपुड़ी— आंध्र प्रदेश का कुचिपुड़ी नृत्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य एक पारंपरिक शैली है। कुचिपुड़ी नृत्य प्रस्तुति प्रार्थना से आरंभ होती है, तत्पश्चात नृत्य-अभिनय को प्रस्तुत किया जाता है। नृत्य प्रस्तुति कर्नाटक संगीत की संगत दी जाती है। कुचिपुड़ी नृत्य का समापन तरंगम प्रस्तुति के पश्चात होता है।
https://youtu.be/uqLTNUl9fO0?si=42h6-xNmRYSIdYy0

मणिपुरी नृत्य – पौराणिक आख्यानों के अनुसार मणिपुरी नृत्य का स्रोत भारत के एक उत्तर-पूर्वी राज्य मणिपुर की घाटियों में स्थानीय गंधर्वों के साथ शिव और पार्वती का दैवीय नृत्य है। इस राज्य के प्रमुख त्योहार 'लाई हरोबा' में इस नृत्य को करने का प्रचलन है। सामान्यत: यह नृत्य स्त्रियों द्वारा किया जाता है। इसमें चेहरे की अभिव्यक्ति के स्थान पर हाथ के हाव-भाव व पैरों की गति महत्वपूर्ण होती है।
https://youtu.be/MNtEA-ssZ1o?si=m1j6wvQYNvCgvfCa&t=56

ओडिसी नृत्य— नाट्यशास्त्र में उल्लिखित 'सोदा नृत्य' से ओडिसी नृत्य रूप को नाम मिला है। कुछ भाव-मुद्राएँ भरतनाट्यम् से मिलती-जुलती हैं। इस नृत्य रूप का मुख्य आकर्षण है। त्रिभंग मुद्रा अर्थात शरीर का तीन मोड़ वाला रूप। नृत्य के दौरान शरीर का निचला हिस्सा काफी सीमा तक स्थिर रहता है और धड़ लय-ताल के साथ गति करता है।
https://youtu.be/Laemed1ZtWw?si=xwQGZvVbPs7HpwPm

मोहिनीअट्टम — भारत के आठ शास्त्रीय नृत्यों में से एक मोहिनीअट्टम का उद्भव केरल राज्य में हुआ। मोहिनीअट्टम की विशेषता घुमावदार कोमल भाव वाले आंगिक अभिनय हैं। इस नृत्य के अंतर्गत अभिनय पर बल दिया जाता है।

इस नृत्य शैली में मुख की अभिव्यक्ति और हस्त मुद्राओं को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। नर्तकियाँ पारंपरिक पोशाक पहनती हैं जिसे 'मुंडू' कहा जाता है। पारंपरिक रूप से मोहिनीअट्टम केवल स्त्रियों द्वारा ही किया जाता है, जबकि कथकली केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।

https://youtu.be/D5M9xvLtM_o?si=6foM67PNFGB8qIoH

विद्यार्थी स्वयं पढ़कर समझें।

साझी समझ

अभी आपने शास्त्रीय नृत्यों को निकटता से जाना समझा। पाँच-पाँच विद्यार्थियों के समूह में भारत के लोक नृत्यों की सूची बनाइए और उनकी विशिष्टताओं का पता लगाइए।

नीचे दिए गए भारत के मानचित्र में राज्यानुसार शास्त्रीय एवं लोक नृत्य दर्शाइए।

कक्षा में विद्यार्थियों के समूहों द्वारा स्वयं किया जाएगा।

उत्तर भारत

- **भांगड़ा और गिद्दा (पंजाब):**
  - **भांगड़ा** पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक ऊर्जा और उत्साह से भरपूर नृत्य है, जो अक्सर फसल कटाई के त्योहार **बैसाखी** पर किया जाता है। इसमें ढोल की तेज़ थाप पर ऊँची कूद और जोशीले движения होते हैं।
  - **गिद्दा** महिलाओं का लोक नृत्य है, जो भांगड़ा से नरम लेकिन उतना ही जीवंत होता है। इसमें तालियों की लय पर पारंपरिक लोकगीत गाए जाते हैं, जिन्हें **बोलियां** कहते हैं।
- **रासलीला और कथक (उत्तर प्रदेश):**
  - **रासलीला** भगवान कृष्ण की जीवन कथाओं, विशेषकर राधा के साथ उनके प्रेम प्रसंग पर आधारित एक नाटकीय नृत्य है।
  - **कथक** शास्त्रीय नृत्य होते हुए भी, इसके लोक तत्व रासलीला और रामलीला जैसे लोक प्रदर्शनों से गहरे जुड़े हुए हैं।
- **घूमर (राजस्थान):**
  - यह भील जनजाति द्वारा शुरू किया गया एक पारंपरिक महिला नृत्य है, जिसे बाद में राजस्थानी समुदायों ने अपना लिया।
  - **विशेषता:** इसमें महिलाएं लंबे, भारी घाघरे पहनकर एक गोल घेरे में घूमती हैं। पैरों की गति के साथ घाघरे का लहराना और हाथों की सुंदर मुद्राएं इसकी पहचान हैं।
- **नाटी (हिमाचल प्रदेश):**
  - यह दुनिया का सबसे बड़ा लोक नृत्य माना जाता है और इसका नाम **गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स** में भी दर्ज है।
  - **विशेषता:** धीमी गति से शुरू होकर यह नृत्य धीरे-धीरे गति पकड़ता है। इसमें स्त्री और पुरुष रंगीन पारंपरिक परिधान पहनकर एक-दूसरे की कमर पर हाथ रखकर एक श्रृंखला में नृत्य करते हैं।

पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत

- **बिहू (असम):**
  - यह असम के **बिहू त्योहार** का एक अभिन्न अंग है।
  - **विशेषता:** इसमें पुरुष और महिलाएं पारंपरिक मूगा सिल्क के कपड़े पहनकर तेज गति से नृत्य करते हैं। यह खुशी और उत्सव का प्रतीक है।
- **गरबा और डांडिया रास (गुजरात):**
  - ये नृत्य **नवरात्रि** के त्योहार के दौरान किए जाते हैं।
  - **गरबा** में देवी की स्तुति में महिलाएं और पुरुष एक गोल घेरे में ताली बजाते हुए नृत्य करते हैं, जिसके केंद्र में एक दीपक या देवी की मूर्ति होती है।
  - **डांडिया रास** में लोग जोड़े में रंगीन डंडियों (डांडिया) के साथ लयबद्ध तरीके से नृत्य करते हैं।
- **छाऊ (ओडिशा, झारखंड, पश्चिम बंगाल):**
  - यह एक अर्ध-शास्त्रीय भारतीय नृत्य है जिसमें मार्शल आर्ट, कलाबाजी और कहानी कहने का मिश्रण होता है।
  - **विशेषता:** इसकी सबसे बड़ी पहचान कलाकारों द्वारा पहने जाने वाले विस्तृत मुखौटे और वेशभूषा है, जो पौराणिक पात्रों को दर्शाते हैं।
- **बांस नृत्य या चेराव (मिजोरम):**
  - **विशेषता:** इसमें पुरुष जमीन पर बांस की लंबी डंडियों को एक लय में खोलते और बंद करते हैं, जबकि महिलाएं इन बांसों के बीच कलात्मक रूप से अंदर-बाहर कूदती और नाचती हैं। इसके लिए अद्भुत समय और समन्वय की आवश्यकता होती है।

दक्षिण भारत

- **लावणी (महाराष्ट्र):**
  - यह एक पारंपरिक गीत और नृत्य का संयोजन है, जो विशेष रूप से ढोलकी की थाप पर किया जाता है।
  - **विशेषता:** यह अपनी शक्तिशाली लय, नाटकीय भाव-भंगिमा और सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य के लिए जाना जाता है। इसमें महिलाएं नौ गज की लंबी साड़ी पहनती हैं।
- **थेय्यम (केरल):**
  - यह एक जीवंत और प्राचीन अनुष्ठानिक नृत्य है।
  - **विशेषता:** इसमें कलाकार विस्तृत मेकअप और वेशभूषा के माध्यम से देवताओं और पौराणिक नायकों का रूप धारण करते हैं। यह नृत्य, पौराणिक कथा और अनुष्ठान का एक अद्भुत संगम है।
- **करगट्टम (तमिलनाडु):**
  - यह वर्षा की देवी **मरिअम्मन** की स्तुति में किया जाने वाला एक लोक नृत्य है।
  - **विशेषता:** इसमें नर्तक अपने सिर पर बिना किसी सहारे के एक सजाए हुए बर्तन (करगम) को संतुलित करते हुए कलाबाजी और नृत्य करते हैं।
- **डोलू कुनिथा (कर्नाटक):**
  - यह **कुरुबा** चरवाहा समुदाय का एक शक्तिशाली ड्रम नृत्य है।

- **विशेषता:** इसमें पुरुष बड़े-बड़े ड्रम (डोलू) बजाते हुए और उन्हें हवा में उछालते हुए ऊर्जावान तरीके से नाचते हैं। यह शक्ति और कौशल का प्रदर्शन है।

खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों की सहायता से आप भारतीय नृत्य, संगीत और बिरजू महाराज के बारे में जान-समझ सकते हैं-

- भारतीय शास्त्रीय संगीत में नृत्य संगत
  https://www.youtube.com/watch?v=W1ZXCUgi848
- कथक परिचय भाग 7
  https://www.youtube.com/watch?v=Dprj69iAM24
- पंडित बिरजू महाराज
  https://www.youtube.com/watch?v=0r3M8D2eAGg&list=PLqtVCj5iilH6BnMc4hIRzVyJ_wtPgky9B

egyanarchive